विचार बिन्दु

साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं। यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।

- राजा राममोहन राय

आयुर्वेदाचार्यों के ज्ञान को प्राथमिकता दीजिये, भीड़-ज्ञान को नहीं

इंटरनेट ने आयुर्वेद पर समाचारों, सूचनाओं और नुस्खों का ऐसा विशाल बाज़ार खड़ा कर दिया है कि आप उससे बच नहीं सकते। वस्तुतः इन्टरनेट, ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान ने पत्रकारिता का ऐसा लोकतंत्रीककरण किया है कि भीड़ोत्पादित इस ज्ञान में प्रमाण-आधार की खोज बहुत कठिन होती जा रही है। विशेषकर, औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचार आयुर्वेद की प्रमाण-आधारित विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। आज की चर्चा का मूल उद्देश्य यह बताना है कि जब सोशल-मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान आयुर्वेद के यथार्थ-ज्ञान को लील रहा हो तो आयुर्वेदाचार्यों का सहारा लेना ही उचित और कल्याणकारी होता है।

इन्टरनेट ने विशाल जनसंख्या के मध्य उपलब्ध दृष्टिकोणों की विविधता को लोगों तक पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया है। यह कार्य अकेले कोई भी मीडिया मानव इतहास में कभी नहीं कर पाया था। लेकिन, इन्टरनेट दुधारी तलवार है। स्वार्थवादियों द्वारा जानबूझकर स्वहितसाधक सनसनीखेज झूठ और सूचनाओं के प्रचार का एक सर्वोत्तम वैश्विक मंच भी आज इन्टरनेट के रूप में मिल गया है। स्वास्थ्य लाभ के लिये वैज्ञानिक जानकारी युक्तिव्यपाश्रयी चिकित्सकीय योगों के निर्धारण में आवश्यक है। लेकिन सर्वश्रेष्ठ क्या है, इसकी आम लोगों द्वारा गलत व्याख्या कर लेने का खतरा तब और भी अधिक बढ़ जाता है जब साँच-झूठ बराबर लोकप्रिय हो रहे होते हैं। यह समस्या आज इसलिये भी बढ़ गयी है क्योंकि भगदड़ वाली जीवनशैली के कारण प्रकाशित सामग्री की सटीकता और सुस्पष्टता सुनिश्चित करने के लिये समय का अभाव है।

आयुर्वेद चमत्कार नहीं अपितु आहार, विहार, रसायन, और औषधियों का का सम्पूर्ण जीवनोपयोगी विज्ञान है। आजकल सोशल मीडिया और विज्ञापनों में आयुर्वेद के ऐसे नुस्खों का भीड़ है जो रामबाण, चमत्कारी, शर्तिया, अचूक, गुप्त इलाज़ आदि नाम से बिक रहे हैं। साथ में प्रलोभन यह भी रहता है कि लाभ न मिले तो पैसा वापस लीजिये। इन लोक-लुभावन परन्तु भ्रामक और अवैज्ञानिक दावों ने एक ओर आम आदमी को असमंजस में डाल रखा है, वहीं दूसरी ओर इन्हें बनाने और बेचने वाले चाँदी काट रहे हैं। आयुर्वेदिक औषधियों के संदर्भ में इस प्रकार के दावों से आयुर्वेद का जितना नुकसान हुआ है, उतना शायद ही कभी और हुआ हो।

वैसे तो शिक्षा के प्रसार के साथ ऐसे दावों के प्रति आमजन में संदेह और सजगता बढ़ी है, लेकिन इस व्यक्तिगत संदेह ने समूची आयुर्वेद चिकित्सा पद्धित को ही संदेहास्पद बनाना शुरू कर दिया है।

समस्या का केवल एक ही निदान है कि आप ऐसी जानकारी पर भरोसा कर लेने के बजाय उत्तम आयुर्वेदाचार्य की सलाह लीजिये। ख्याल रखिये, जिन लोगों द्वारा चमत्कार के दावे किये जाते हैं, उनका प्रायः आयुर्वेद से धन कमाने के अतिरिक्त और कोई लेना-देना नहीं रहता है।

गलाकाट प्रतिस्पर्धा में भिड़ी हुई फार्मेसियाँ बाकी कसर निकाल देती हैं जो उनकी औषधियों के चमत्कारी होने का दावा करती हैं। उदाहरण के लिये, चार राज्यों में आयुर्वेद की औषधियाँ बेचने वाली कुछ दुकानों में सबसे महंगी आयुर्वेदिक औषधि की उपलब्धता पूछे जाने पर उत्तर में जिन औषधियों के नाम आये, उनमें सबसे विस्मयकारी तो एक ऐसा रसायन मिला जिसके आधा किलोग्राम वजन वाले डिब्बे की कीमत 9900 रुपये से अधिक थी। इसके अलावा सैक्स और ब्यूटी के बाजार में आयुर्वेद के नाम पर कई गोपनीय औषधियाँ भी छायी हुई हैं, जो 5000 से 7000 रुपये प्रति पैक धड़ल्ले से बिकती हैं। जाने-अनजाने कई वास्तविक आयुर्वेदाचार्य भी गलती कर बैठते हैं, जब रोगी को परामर्श व औषधि-निर्धारण करते हुये प्रायः यह कह देते हैं कि इस औषधि का इस रोग में चमत्कारी प्रभाव है।

एक बार पुनः यह बताना आवश्यक है कि चमत्कार और विज्ञान का आपस में पुश्तैनी बैर है। चमत्कार के लिये कारण और प्रभाव को स्थापित करने की कोई सार्वभौमिक, सैद्धान्तिक या प्रायोगिक बाध्यता नहीं है। ड्रग एंड मैजिक रेमेडीज (ऑब्जेक्शनेबल एडवरटाईजमेंट) एक्ट, 1954 ऐसी औषधियों के विज्ञापनों का निषेध करता है, जो चमत्कारी प्रभाव का दावा करती हैं। यह एक संज्ञेय या हस्तक्षेप्य अपराध है। तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे प्रकरण में पुलिस बिना किसी न्यायालय की अनुमति के दखल कर सकती है। ऐसी 54 बीमारियों से संबंधित चिकित्सा, निदान या रोकथाम हेतु चमत्कारी दवा से संबंधित विज्ञापनों पर अभी प्रतिबंध है। इस वैधानिक स्थिति के बावजूद कैंसर, बहरापन, मधुमेह, बन्ध्यापन, नाड़ीतंत्र, पौरुष-ग्रंथि, मिर्गी, पथरी, गेंगरीन, लकवा, कुष्ठ, मोटापा, अस्थि-रोग, नामर्दगी, यक्ष्मा आदि जैसी अनेक बीमारियों के बारे में टेलीविजन, अखबार एवं सोशल मीडिया में चमत्कारी दावे आज भी किये जाते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। रामबाण शब्द का हिंदी में प्रयोग देखने पर गूगल सर्च में 7.82 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। अंग्रेजी में मैजिक और आयुर्वेद खोजने पर लगभग 9.0 लाख सन्दर्भ आते हैं। इसी प्रकार रामबाण इलाज के 2.92 लाख सन्दर्भ, रामबाण दवा के 1.29 लाख सन्दर्भ, और रामबाण आयुर्वेदिक दवा के 1.36 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। यदि चमत्कार एवं आयुर्वेद खोजें तो 1.34 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। इसके विपरीत, प्रमाण-आधारित आयुर्वेदिक चिकित्सा, या आयुर्वेद के मैजिक की साइंस खोजने पर 200 के अन्दर सभी सन्दर्भ सिमट जाते हैं। आयुर्वेद में चमत्कार किये जाने के दावे उन रोगों के लिये तो हैं ही जिन्हें असाध्य माना जाता है, परंतु बूढ़े को जवान बनाने, गोरा रंग व सुदर्शन काया प्राप्त करने, और नामर्द में मर्दानगी बढ़ाने के चमत्कारिक नुस्खे भी कोई कम नहीं हैं।

तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे प्रकरण में पुलिस बिना किसी न्यायालय की अनुमति के दखल कर सकती है। ऐसी 54 बीमारियों से संबंधित चिकित्सा, निदान या रोकथाम हेतु चमत्कारी दवा से संबंधित विज्ञापनों पर अभी प्रतिबंध है। इस वैधानिक स्थिति के बावजूद कैंसर, बहरापन, मधुमेह, बन्ध्यापन, नाड़ीतंत्र, पौरुष-ठांथि, मिर्गी, पथरी, गेंगरीन, लकवा, कुष्ठ, मोटापा, अस्थि-रोग, नामर्दगी, यक्ष्मा आदि जैसी अनेक बीमारियों के बारे में टेलीविजन, अखबार एवं सोशल मीडिया में चमत्कारी दावे आज भी किये जाते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। रामबाण शब्द का हिंदी में प्रयोग देखने पर गूगल सर्च में 7.82 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। अंठोजी में मैजिक और आयुर्वेद खोजने पर लगभग 9.0 लाख सन्दर्भ आते हैं। इसी प्रकार रामबाण इलाज के 2.92 लाख सन्दर्भ, रामबाण दवा के 1.29 लाख सन्दर्भ, और रामबाण आयुर्वेदिक दवा के 1.36 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। यदि चमत्कार एवं आयुर्वेद खोजें तो 1.34 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। इसके विपरीत, प्रमाण-आधारित आयुर्वेदिक चिकित्सा, या आयुर्वेद के मैजिक की साइंस खोजने पर 200 के अन्दर सभी सन्दर्भ सिमट जाते हैं। आयुर्वेद में चमत्कार किये जाने के दावे उन रोगों के लिये तो हैं ही जिन्हें असाध्य माना जाता है, परंतु बूढ़े को जवान बनाने, गोरा रंग व सुदर्शन काया प्राप्त करने, और नामर्द में मर्दानगी बढ़ाने के चमत्कारिक नुस्खे भी कोई कम नहीं हैं।

वास्तविकता को तीन स्तरों पर देखा जाना आवश्यक है। पहली बात यह है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चमत्कारिक चिकित्सा जैसा कोई पाठ पढ़ने में नहीं आता। दूसरा, आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी इस प्रकार के हाथों-हाथ चमत्कार का कोई प्रमाण नहीं मिलता। और, अंततः आयुर्वेदाचार्यों के अनुभवजन्य-ज्ञान में भी चमत्कार के कोई लिखित व शोधपरक प्रमाण नहीं मिलते, भले ही उनमे से कुछ ने इस शब्द को त्रुटिवश बार-बार उपयोग करने की आदत डाल ली हो।

आयुर्वेद में सबसे पुराने ग्रन्थ चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता की भाषायी व्यवस्था प्रायः आधुनिक काल के वैज्ञानिक शोध-पत्रों की तरह संयमित एवं मर्यादित है। यही बात आचार्य वाग्भट के अष्टांगहृदय पर भी लागू होती है। यहां तक की 13वीं शताब्दी में लिखी गई शारंगधर संहिता या बाद के काल में आचार्य चक्रपाणिदत्त द्वारा लिखे गये चिकित्सा ग्रन्थ चक्रदत्त में कहीं-कहीं भाषायी अलंकार अवश्य परिलक्षित होता है, तथापि चमत्कार जैसे शब्दों से उन्होंने भी उचित और सम्मानजनक फ़ासला बनाये रखा। संहिताओं के ऐसे श्लोक, जो चमत्कार के नजदीक जाते हुये परिलक्षित होते हैं, वे भी हमारे द्वारा भाषा की समझ के फेर के कारण ही होगा, अन्यथा संहिताओं के प्रत्येक योग का विस्तृत वर्णन एवं संबंधित औषधि की फलश्रुति में चमत्कार शब्द का प्रयोग नहीं हुआ। इनमें रोग-निदान एवं चिकित्सा, आहार-विहार, रसायन एवं औषधि के साथ पथ्य-अपथ्य का विस्तृत वर्णन मिलता है। चरकसंहिता के संपूर्ण चिकित्सा स्थान और उस पर दिग्गज आचार्यों जैसे चक्रपाणि, गंगाधर आदि द्वारा की गई टीकाओं में भी चमत्कार शब्द के दर्शन नहीं होते हैं। इनमें चिकित्सकीय योगों और औषधियों, उनसे जुड़ी संपूर्ण जानकारी तथा प्रभाविता के लिये तुलनात्मक जानकारी का ऐसा वर्णन है जिन्हें आज भी विज्ञान-सम्मत माना जाता है। संहिताओं में तो इस हद तक सावधानी बरती गई है कि जिन प्रकरणों में अतिशयोक्ति अलंकार है, उनमें आचार्यों ने प्रायः ऐसा इंगित भी कर दिया है या सुनी-सुनाई होने का संकेत कर दिया है। यहाँ तक कि भैषज्य रत्नावली नामक ग्रन्थ में जहाँ एक योग का नाम रामबाण रस है, उपमा के बावज़ूद उसका वर्णन भी तार्किक और मर्यादित है।

इन परिस्थितियों में ध्यान रखने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, चमत्कार नहीं। आयुर्वेदिक औषधियां भी अचूक, रामबाण या चमत्कारिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप ही प्रभावी या उपयोगी होती हैं। वस्तुतः आयुर्वेद एक प्रमाण-आधारित, विस्तृत, प्रभावी, समग्र और संपूर्ण चिकित्सा पद्धित है जिसके द्वारा स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगी का रोगोपचार होता है।

आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, आय का नहीं। पर समय तेजी से बदल रहा है, और यह आयुर्वेद के लिये अच्छा ही है, बशर्ते बात प्रमाण-आधारित आयुर्वेद की हो रही हो। बात यदि भयंकर से भयंकर एसिडिटी चुटकी बजाते ही गायब कर दिये जाने की हो तो इसे झांसेबाज़ी ही समझिये। प्राचीन भारतीय साहित्य का सहारा लें तो यह कहना समीचीन होगा कि रामबाण केवल रामजी के पास ही है, और उसका प्रयोग भी केवल उन्ही के बस की बात है। औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचारी दावा प्रमाण-आधारित आयुर्वेद चिकित्सा पद्धित की वैज्ञानिकता और विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। लोगों को स्वविवेक का प्रयोग करते रहना चाहिये और किसी बहकावे में नहीं आना चाहिये। आयुर्वेद को चमत्कार नहीं, अपितु विशिष्ट विधियों एवं सिद्धांतों से युक्त एक उत्कृष्ट चिकित्सा विज्ञान समझने में ही व्यक्ति, समाज और अर्थव्यवस्था की भलाई है।

समस्या असली आयुर्वेदाचार्य को छाँटने की भी कम नहीं है। किसी भी शहर में वास्तविक और असली बैचलर ऑफ़ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी की उपाधि वाले आयुर्वेदाचार्यों के अलावा विविध उपाधियों के बोर्ड लगे वैधजी, वैध्यजी, वेदकाचार्य, वेदजी, वेधजी आदि भी खूब फल-फूल रहे हैं। ये सब छद्मायुर्वेदाचार्य हैं। ऐसी स्थिति में ध्यान रखिये, विधिवत आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त बेचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसन एंड सर्जरी, मास्टर आफ आयुर्वेदिक मेडिसिन, आयुर्वेद में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी जैसी उपाधियाँ ही मान्य हैं। वास्तविक और मान्य उपाधियों से रहित कोई भी व्यक्ति चिकित्सा करता है तो वह चिकित्सकीय दुष्कर्म है।

- डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

जन-जन के नायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस

डॉ. जे. के. गर्ग

जन जन के नायक नेताजी तूम मुझे खून दो में तुम्हे आजादी दुगां के नारे के जनक आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जन नायक सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहाँ हुआ था। सुभाष 14 लड़के लड़कियों में से नौवीं संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में रेवेनशा कॉलेजिएट स्कूल में हुई। उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की थी इस परीक्षा में उन्हें यूनिवर्सिटी में उन्हें दूसरा स्थान मिला था।1920 की आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथे स्थान मिला। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने से एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया क्योंकि उनके दिल अंग्रेजों की गुलामी और भारत माता का आजाद करने का जुनून था। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। वहाँ 20 जुलाई 1921 को गांधी जी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। नेहरूजी के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अंतर्गत युवाओं की इण्डिपेंडेंस लीग शुरू की। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष बनाये गये सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब इस अधिवेशन के अन्दर तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा। अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने के लिये क्रष्ण मन्दिर जाना पड़ा। 1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। वे जब कलकत्ता महापालिका के प्रमुखख अधिकारी बने तो उन्होंने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम हटाकर भारतीय नाम पर कर दिया।1934 ई. में सुभाष अपना इलाज कराने के लिए ऑस्ट्रिया गए थे। उस समय उन्हें अपनी पुस्तक टाइप करने के लिए एक टाइपिस्ट की जरूरत थी। उन्हें एमिली शेंकल नाम की एक टाइपिस्ट महिला मिली। उन्होंने से सन् 1942 में बाढ़ गस्टिन नामक स्थान पर हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार एमिली शेंकल से विवाह किया। एमिली शेंकल से उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम अनीता रखा। सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुना गया। इसअधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। 3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बंगाल की भयंकर बाढ़ में घिरे लोगों को उन्होंने भोजन, वस्त्र और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का साहस पूर्ण काम किया था। समाजसेवा का काम नियमित रूप से चलता रहे इसके लिए उन्होंने युवक-दल की स्थापना की।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया था उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। उन्होंने भारतवासियों को "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा दिया था जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क में गूंज रहा है। 21 अक्टूबर1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्छेको और आयरलैंड समेत 11 देशों ने मान्यता दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगी। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रिपता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा, तभीसे उन्हें नेताजी कहा जाने लगा। नेताजी ने कहा था कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमेंअपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। सुभाषबाबू ने कहा था याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहनाऔर गलत के साथ समझौता करना है। नेताजी कहा करते थे कि एक सैनिक के रूप में उनको आपको हमेशा सच्चाई, कर्तव्यऔर बलिदान जेसे तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा।

23 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बड़े बम वर्षक विमान सेआ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदाई, पायलट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्होंने अंतिम श्वास ली और नेताजी पंच महाभूतों में विलीन हो गये। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थियाँ संचित करके जापान की राजधानी टोक्यो के रेगोंजी मंदिर में रख दी गयी भारतीय महालेखाकार से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने के नेताजी का प्रयास हालांकि प्रत्यक्ष रूप में सफल नहीं हो सका था किन्तु उनका दूरगामी परिणाम हुआ। सन् 1946 के नौसेना का विद्रोह इसका जीता जागता प्रमाण है। नौसेना विद्रोह के बाद ही ब्रिटेन को विश्वास हो गया कि अब भारतीय सेना के बल पर भारत में शासन नहीं किया जा सकता और भारत को स्वतंत्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा। आजाद हिन्द फौज को छोड़ कर विश्व-इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं मिलता जहाँ तीस-पैंतीस हजार युद्ध बंदियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा प्रबल संघर्ष छेड़ा हो। सुभाष चंद्र बोस के उनके संघर्षों और देश सेवा के जज्बे के कारणही महात्मा गांधी ने उन्हें देश भक्तों का देशभक्त कहा था। नेताजी मानते थे कि जिस व्यक्ति के अंदर सनक नहीं होती वो कभी महान नहीं बन सकता। लेकिन उसके अंदर, इसके अलावा भी कुछ और होना चाहिए। जन जन के दुलारे नेताजी का जन्मदिन देश में पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। जन जन 23 जनवरी 2023 को राष्ट्र उनके 126 वें जन्म दिन पर उनके श्री चरणों मेंश्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

- डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कॉलेज शिक्षा जयपुर।

भजनलाल का तात्पर्य नई पीढ़ी नहीं, नई आकांक्षा है

रामगोपाल जाट

ढाई दशक बाद राजस्थान नई उड़ान की ओर है। राज्य की नई उम्मीदों और अपेक्षाओं का पक्षी आसमान में उड़ रहा है। राजस्थान जो आन-बान-शान का प्रतीक है, शौर्य की धरती है। प्राकृतिक रूप से सभी प्रकार के मौसम, जलवायु, वातावरण और भूमि का मिश्रण यहां पाया जाता है, उसके जन को ढाई दशक बाद नया चेहरा मिला है। यह सरकार केवल सरकार नहीं है, बल्कि 8 करोड़ जनता की उम्मीदों का अपार समुद्र है, जिसका संतुलित दोहन कर जनमानस की अपेक्षाओं का घड़ा भरने का भार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उनके मंत्रिमंडल के ऊपर है, जो न केवल आयु वर्ग के अनुसार युवा हैं, बल्कि जन अपेक्षाओं के मुताबिक भी जोशीला दल है।

पहली बार जीते भजनलाल शर्मा और उनका मंत्रिमंडल कई समानताएं लिए हुए है। भजनलाल भी 55 वर्ष के हैं, उनका मुख्य सचिव भी लगभग 55 वर्ष का है और अधिकांश मंत्री भी करीब उन्हीं की आयु वर्ग के हैं। पूरी टीम राजनीति के अनुसार युवा है। अनुभव भले ही भजनलाल को प्रशासनिक नहीं होगा, किंतु संगठन में काम करने का 3 दशक का हो चुका है। पहले एबीवीपी में, फिर युवा मोर्चा से होते हुए भाजपा में इतना लंबा अनुभव उनको प्रत्येक कार्यकर्ता की कार्यशैली से अवगत कराने के लिए काफी है। यह अनुभव उनको इस बात का भी आभास कराता रहेगा कि कार्यकर्ता और आम आदमी सरकार से क्या अपेक्षा रखता है। राजस्थान में करीब 2 दशक बाद सत्ता का नेतृत्व बदला है। हालांकि, यह काम कांग्रेस को पांच साल पहले करना चाहिए था, किंतु कांग्रेस ऐसा नहीं कर पाई। पांच साल पहले अशोक गहलोत को सत्ता का सुख भोगते 2 दशक बीत चुके थे, लेकिन शायद कांग्रेस में इतनी हिम्मत नहीं थी कि गहलोत की जगह युवा सचिन पायलट को सत्ता की चाबी सौंपती। भाजपा ने इस काम को जितने धौर्य से किया, उतनी ही ताकत से अंजाम तक पंहुचाया। भाजपा ने इसकी नींव पांच साल पहले सत्ता से बेदखली के साथ ही रखी दी थी। इन पांच वर्षों में पार्टी ने अध्यक्ष बदलने का निर्णय बहुत सूझबूझ के साथ लिया। अध्यक्ष के तौर पर डॉ. सतीश पूनियां को 3 वर्ष फ्री हैंड करके काम करने का अवसर दिया और जब तमाम बुरी ताकतों द्वारा अध्यक्ष के खिलाफ माहौल बनाया गया तो चेहरा बदलने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

भाजपा ने चुनाव मोदी और कमल के फूल पर चुनाव लड़ने की घोषणा करके अपने इरादे जाहिर कर दिये थे, किंतु वसुंधरा राजे फिर भी मानने को तैयार नहीं थीं कि उनको कोई हटा सकता है, और इस तरह से एक झटके में हटा सकता है। अपनी मां के दम पर राजनीति में आईं और 10 साल तक राजस्थान पर पूरी तानाशाही से राज किया, उससे भाजपा का आम कार्यकर्ता त्रस्त था। अब समय बदल गया है। एक आम कार्यकर्ता सत्ता का मुखिया है और एबीवीपी निकला चेहरा पार्टी का चेहरा है। ऐसे में दोनों के पास पार्टी के आम कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का अनुभव है, उनका दुख-दर्द समझने का भी लंबा अनुभव है। भजनलाल शर्मा आम कार्यकर्ता जैसे हैं। अभी तक वो जिस तरह से जनता के बीच में हैं, उससे उनकी लोकप्रियता बढ़ रही है। कोई भी मुख्यमंत्री जितना जनता के लिए आम बना रहेगा, उतनी ही लोकप्रियता बढ़ती रहेगी। पूर्व सीएम वसुंधरा-गहलोत ने इस मामले में जनता का खूब उपहास उड़ाया। भजनलाल रात-दिन मेहनत कर रहे हैं। रैन बसेरों में जाना, जनता के बीच में खड़े होकर उनकी बात को सुनना, आम व्यक्ति की तरह सुबह पार्क में टहलते हुए साधारण जनों से बात करना, अचानक आधी रात थानों में पहुंच जाना और उसके साथ ही अपने निवास पर आमजन से बिना भेदभाव के मिलना उनके कद में वृद्धि कर रहा है और यही कार्य भजनलाल को खास सीएम बनाता है। हालांकि, उनको इसमें थोड़ी सावधानी भी रखनी होगी कि कहीं उनके साथ फोटो खिंचवाकर सत्ता और संगठन में दलाली करने वाले भ्रष्ट उनकी तस्वीरों के साथ उनकी छवि को भी नहीं बेच दें। पिछले दिनों देखा कि पार्क में टहलते हुए उनको कुछ दलालों ने घेर लिया था। हालांकि, एक आम कार्यकर्ता की भांति उनको भी इस बात का ध्यान नहीं रहा होगा, किंतु फिर भी सावधानी से ही उनकी छवि बची और बनी रहेगी।

जिस चीज से जनता पिछले 25 वर्षों में दुखी रही, वो यही थी कि मुख्यमंत्री जनता से आसानी से मिलता ही नहीं था। दोनों सीएम का बर्ताव ऐसे था, जैसे कोई महा पराक्रमी सम्राट हो, जिसके दर्शन करने को भी लोग तरस जाते थे। भजनलाल को अधिकारी वर्ग से बेहद सावधान रहने की जरूरत है। यह वर्ग सीएम की छवि को जनता से दूर करने की बनाता है। यह वर्ग न तो स्वयं आम जन से मिलता है और न ही यह चाहता है कि सीएम या मंत्री जनता से मिले। परिणाम यह होता है कि जनता सरकार से नाराज हो जाती है। विकास अपनी जगह है, किंतु आमजन और पार्टी कार्यकर्ता सबसे बड़ी अपेक्षा यही रखते हैं कि मुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक से उनकी बिना किसी तामझाम के मुलाकात हो जाए। ऐसी ही छवि सीएम भजनलाल को स्वयं और अपनी सरकार की बनानी है, अन्यथा पांच वर्ष बीतने में समय नहीं लगता है। आज गहलोत-वसुंधरा से लोग मिलना भी नहीं चाहते हैं, वो नए सीएम भजनलाल से नई उम्मीद के साथ मिलना भी चाहते हैं और अपनी बात सीधे सीएम, मंत्री तक पहुंचाना भी चाहते हैं। सीएम, मंत्री जितना आमजन से मिलेंगे, उतनी ही उनकी और सरकार की छवि स्वच्छ व जनहितैषी होती चली जाएगी। यह अवसर भजनलाल को बेहद आसानी से मिला है, किंतु इस अवसर को बड़े अवसर में बदलने की कमान अब उनके ही हाथ में है। देखते हैं, कमान कितनी मजबूती से पकड़े रखते हैं।

- रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार।

बीकानेर में शीतलहर का प्रकोप जारी

बीकानेर, (निसं)। मरुनगरी यानी बीकानेर भयंकर शीतलहर की चपेट में है। प्रदेश में चल रहे तेज सर्दी का प्रकोप बीकानेर अंचल को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। पिछले तीन दिनों से दिन में भी गलन बनी हुई है। वहीं रातें बेहद ठंडी रह रही हैं। गुरुवार की रात बीकानेर में इस माह की सबसे सर्द रात रही। न्यूनतम तापमान 2.4 डिग्री दर्ज किया गया, जो राज्य में माउंट आबू के बाद सबसे कम रहा। माउंट आबू में माइनस एक डिग्री न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। कल की भी सुबह कोहरे के बीच ही हुई।

पिछले तीन दिनों से ऐसा हो रहा है कि पूरे क्षेत्र को कोहरा अपनी चपेट में ले लेता है। वहीं धूप निकलने के बाद भी इतनी असरदार नहीं लगती। फिर भी थोड़ी राहत मिल जाती है। मौसम विभाग के अनुसार, फिलहाल हल्के कोहरे का असर बना रहेगा। शनिवार को दोपहर में अच्छी धूप खिली, जिससे दिन का अधिकतम तापमान 21.7 डिग्री रहा। यह गुरुवार के मुकाबले लगभग चार डिग्री अधिक रहा। वहीं न्यूनतम तापमान 2.4 डिग्री दर्ज किया गया, जो कि गुरुवार के मुकाबले पांच डिग्री कम रहा। इससे पूर्व इस माह बीकानेर में न्यूनतम तापमान पांच जनवरी को 2.8 डिग्री रहा था। दिन खुलने के साथ हल्के कोहरे के कारण धूप थोड़ी देर से निकली, पर गुनगुनी ही रही। लोग सर्दी से बचने के लिए दिन भर गुनगुनी धूप सेंकते रहे। इससे पूर्व गुरुवार रात होने के साथ ही सर्दी का असर बढ़ गया था। देर रात तक तक गलन का अहसास होने लगा था। इससे न्यूनतम तापमान गिर गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 21 जनवरी 2024

पौष मास शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, विक्रम सम्वत 2080, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 3.52 तक, शुक्ल योग प्रातः 9.46 तक, वाणिज करण प्रातः 7.27 तक, चन्द्रमा आज प्रातः वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृष, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज राजयोग ओर दिपुष्कर योग रात्रि 3.52 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा प्रातः 7.25 तक रहेगी। आज पुत्रदा एकादशी व्रत, मन्वादि व्रत है आज से राष्ट्रिय माघ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघडिया - शुभ 8.40 से 9.59 तक, चर - 1.57 से 3.17 तक, लाभ-अमृत 9.54 से 12.38 तक।

राहुकाल - 9.00 से 10.30 तक, सूर्योदय 7.21 सूर्यास्त 5.54

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बडेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आय में वृद्धि होगी।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। घर-परिवार में अथितियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेंगी। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। अथितियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा।